जब टूट गई गुल्लक

महेश कुमार केशरी
बोकारो (झारखंड)

कानू चाचा ठेले पर इमली की लाल चटनी बेचा करते थे। उनके ठेले पर कच्चे आम के टुकड़े भी बिकते जिसमें लाल मिर्च डालकर कानू चाचा हमें देते थे। उस समय आज की तरह चीजें मँहगी नहीं हुआ करती थी चवन्नी या अठन्नी ही हमें रोज घर से मिला करती थी। कानू चाचा पुराने पीपल के पेड़ के नीचे अपना ठेला लगाते थे। छुट्टी और टिफिन के समय भी बच्चे उन्हें घेर लेते थे। उनकी दूकान पर छुट्टी और टिफिन के समय इतनी भीड़ बढ़ जाती थी कि कभी–कभी कानू चाचा हमें दिखाई ही नहीं देते थे। लेकिन वे वहीं ठेले पर आम के कच्चे टुकड़ों के बीच नमक और मिर्च डालकर बच्चों को बेचते मिलते। लाल ईमली की चटनी हमारी फेवरेट थी। इसके अलावे वे पाचक और जीरा बट्टी भी बेचते थे। एक मर्तबान में काले बेर पड़े रहते थे। जो आठ आने के दस मिलते थे। उस बेर में हमारे प्राण बसते थे। चटनी, कच्चे आम स्कूल और दोस्त ही हमारा जीवन था। इतनी भागदौड़ भरी जिंदगी ना थी। शाम तक कानू चाचा के पास सौ–डेढ़ सौ रूपये तक की बिक्री हो जाती थी। कानू चाचा काने थे। लेकिन बहुत ही हँसोड़ प्रवृत्ति के थे। बात–बात पर हम बच्चों को हँसाते रहते। चुटकुलों–लतीफों की बहुत लंबी फेहरिस्त थी कानू चाचा के पास। हम बच्चों का आकर्षण कच्चे आम और जीराबट्टी के अलावे कानू चाचा ही हुआ करते थे। कारण उनके पास चुटकुले, कहानियाँ और लतीफे हुआ करते थे। कहानियों का एक जखीरा था उनके पास, अभिशप्त चुड़ैलों का परियों में रूपांतरण होने से लेकर बूढ़े किसान के मेहनती और ईमानदार होने तक के कई किस्से होते थे। उनके पास उनकी कहानियों में रोमांच, डर, चौंकना सब एक ही साथ होता था। हम लोग उनकी बातें साँसें रोककर सुनते। उनकी भूतों वाली कहानियाँ सुनकर हम कभी–कभी डर जाते। बावजूद इसके हम उनसे कहानियाँ सुनने के लोभ का सँवरन ना रोक पाते। आज के दौर में सैकड़ों टी.वी. चैनल हैं। जहाँ बच्चों की एक से एक बढ़कर कहानियाँ दिखाई देती हैं। लेकिन जो मजा कानू चाचा की कहानियों में था। वो अब किसी टी.वी. के बाल कहानियों में नहीं दिखाई देता है।

मुझे अच्छी तरह याद है। उस समय हम सातवीं क्लास में पढ़ते थें। कुछ दिनों से कानू चाचा अपनी दूकान नहीं लगा रहे थे। हम बच्चों का मन उदास रहने लगा था। करीब सप्ताह भर बाद हम लोगों को पता चला कि कानू चाचा बहुत बीमार हैं। तब हम बच्चे अपनी–अपनी साईकिल लेकर कानू चाचा से मिलने उनके घर पहाड़पुर चले गये थे। पहाड़पुर सचमुच में पहाड़ पर ही बसा हुआ था। घने जँगलों, नदियों, और चारों तरफ पेड़ ही पेड़ थे। हमारी थकान इन जँगलों और पेड़ों को देखकर जाती रही थी। गर्मी बहुत पड़ने के कारण हमें प्यास भी लग आई थी। हमने झरने का खूब पानी पिया। साईकिल चलाने के बाद इतनी चढ़ाई पर हमें पेड़ों और पहाड़ों के बीच बहुत अच्छा लग रहा था।

कानू चाचा सचमुच में बीमार थे। उनकी बूढ़ी पत्नी और लड़की रूपा उनकी सेवा–सुश्रूषा में दिन रात लगे रहते थे। हमारे पड़ोस में हमारे जान–पहचान के एक डॉक्टर चाचा रहते थे। उनका नाम बंसल चाचा था। हम दोस्तों की टोली थी। जिनके नाम क्रमशः रिपु, दमन अहमद, कुरैशी, सोनू, डब्लू, पिंटू और रेशमा, अनीता और डुग्गू थे। हम लोग पक्के दोस्त थे। एक साथ खाना, एक साथ सोना, एक साथ खेलने के लिये जाना । एक साथ स्कूल जाना। एक साथ होमवर्क करना। सब कुछ साथ ही साथ होता था।

कानू चाचा का हाल जानकर हम वहाँ से चल पड़े। रास्ते में हमने योजना बनाई की गरीब, बीमार और असहाय कानू चाचा की मदद हमें हर हाल में करनी चाहिये। और हमने अपनी समस्या बंसल चाचा को बताई। अगले दिन एक ऑटो से हम बच्चे बंसल चाचा को लेकर कानू चाचा के घर पहुँचे। डॉक्टर बंसल चाचा ने कानू चाचा की नब्ज टटोली। फिर जीभ का रंग अपनी टॉर्च से देखा। टॉर्च से ही आँखों का मुआयना किया फिर, उन्होंने कुछ टेस्ट किये। टेस्ट की रिपोर्ट पहले शहर जाकर चेक होकर आती थी। करीब सप्ताह भर बाद टेस्ट की रिपोर्ट आई। इन सात दिनों तक हमारी नींद और चैन खो गया था। हमारा ध्यान पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लग रहा था। हम दोस्तों के बीच कानू चाचा और उनकी बीमारी को लेकर ही चर्चा चलती रहती। कानू चाचा की बूढ़ी पत्नी से ही हमें पता चला था कि इधर ठेला नहीं लगने के कारण उनका परिवार भूखमरी के कागार आ गया है। इलाज और डॉक्टर की फीस भरने तक के पैसे उनके पास नहीं थे। हम सभी साथियों ने मिलकर ये फैसला किया था कि हमारी पॉकेट मनी जो उस समय गुल्लक में जमा रहती थी, को तोड़कर कानू चाचा की दवाई, टेस्ट और फीस के लिये दे देंगे। सात दिनों के बाद शहर से कानू चाचा की रिपोर्ट आ गई थी। कानू चाचा को दर असल मलेरिया हो गया था डॉक्टर चाचा ने कागज पर कुछ दवाईयाँ लिख कर दी थी। तब हमने अपनी–अपनी गुल्लक से साझा कर टेस्ट और डॉक्टर चाचा की फीस के पैसे दिये थे। डॉक्टर चाचा हम बच्चों की किसी असहाय गरीब की मदद करने वाली भावना से बहुत प्रभावित हुए थे। उन्होंने अपनी फीस हमसे लेने से साफ मना कर दिया। हम लोगों को शाबाशी भी दी थी। पर्ची लेकर हम बच्चे गाँव के ही मेडिकल स्टोर से कानू चाचा के लिये दवाई खरीद कर ले आये थे। कानू चाचा और उनकी बूढ़ी पत्नी ने हम बच्चों को बहुत आशीर्वाद दिया था। करीब महीने भर बाद कानू चाचा ने अपना ठेला लगाया। और हम फिर से कच्चे आम, बेर और ईमली की चटनी का आनंद लेने लगे थे।